DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor,
Deptt. of Samskrit,
S.R.A.P. college, Bara Chakia

B.A. (Hons.), Part – II
Subject – Samskrit
Paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (द्वितीयोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० – 3

न नमयितुमधिज्यमस्मि शक्तो धनुरिदमाहितसायकं मृगेषु।
सहवसतिमुपेत्य यैः प्रियायाः कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः॥

अन्वयः

अधिज्यम् आहितसायकं इदं धनुः मृगेषु नमयितुं न शक्तोऽस्मि यैः प्रियायाः सहवसतिम् उपेत्य मुग्धविलोकितोपदेशः कृत इव अस्ति।

अनुवाद

अपने इस बाण सन्धान किये हुए धनुष को मैं उन मृगों के ऊपर तानकर उनपर बाण को नहीं छोड़ सकूँगा, जिन मृगों ने मेरी प्रिया के साथ ही साथ वन में रहकर उसकी-सी नेत्र कान्ति पायी है।